ISSN 2320-768X, Impact Factor : 2.2
Vol. IX, Issue I (April – 2021)

"संस्कृत व हिन्दी साहित्य में संगीत का महत्व"

डा0 सुनीता सिवाच
एसोसिएट प्रोफेसर
इन्स्टीटयूट् आफ हायर लर्निंग
भगत फूलसिंह महिला विष्वविद्यालय (खानपुर कलां) सोनीपत

शोध प्रपत्र सार

"साहित्य, संगीत और कला" वैसे तो इनका परस्पर जुड़ाव सार्वभौमिक ही है लेकिन इस विशय पर हमारे संस्कृत आचार्या कवि भतृहरि जो का कथन भी बिल्कुल उचित एव ंसच ही था–

"साहित्य संगीत –कला विहीना।

साक्षात् प ा पुच्छ विशाण होना।।"

कि साहित्य संगीत और कला कके बिना एक मनुश्य प ा के समान है। उनके ये महत्वपूर्ण व सुन्दर विचार सदा से ही संगीत, साहित्य व कला के जुड़ाव को लेकर अत्यधिक प्ररेणादायक व सहायक सिद्ध हुए है। इस जुड़ाव में न केवल मानव बल्कि प्रकृति का कण–कण भी संजीव हो उठता है हमारे कवियों की रचनाएँ इस बात का जीता जागता उदाहरण है फिर चाहे वे हिन्दी भा ाा के कवि हों या फिर संस्कृत साहित्य से जुड़े महान रचनाकार । साहित्य को जन–जन तक पहुॅचाने का कार्य संगीतकला के द्व ारा जिस प्रकार से किया जाता है। वह किसी अन्य माध्यम से संभव ही नहीं है।

संस्कृत साहित्य एवं संगीत :–

संस्कृत भाशा एक बहुत हो सुन्दर, सरल, मधुर व व्यवस्थित भाशा है इस भा ाा में जो मधुरता है वह एक संगीतात्मकता व छन्दोबद्वता के कारण ही है इस विशय में तो संस्कृत आचार्य भतृहरि जी का कथन बिल्कुल सत्य है–

"साहित्य संगीत कला विहीना।

साक्षात प ा पुच्छ विशाणहीना।।"

इसमें भतृहरि जो कहते हैं कि साहित्य संगीत और कला के बिना एक मनुश्य प ा के समान है उनका यह महत्वपूर्ण कथन सदा से ही संगीत साहित्य व कला के जुड़ाव को लेकर अत्यधिक प्रेरणा दायक व सहायक सिद्व हुआ है। संस्कृत साहित्य में जो गेयात्मक भलोक हैं उन्हें हम गीत व गीतिका कहते हैं अधिकतर संस्कृत वाड़मय संगीतमय है। इसके साथ ही हमारे महान संत एवं कति महर्शि वाल्मीकि जो एवं महर्शि वेद व्यास जी द्वारा रचित रामायण व महाभारत में अनेकों पदों व भलोकों का उल्लेख किया गया है जो गेयात्मक हैं। व इस बालक स्पश्ट उदाहरण है कि संस्कृत साहित्य संगीत से कदापि अछूता नहीं रहा है। यदि हम इस और देखें कि जब हमने किसी अतिथि का स्वागत करना हो या किसी भी कार्यक्रम में हमें दीप प्रज्वलित करना हो तो उस समय के सुन्दर भलोक या वेदमन्त्र ही होते है जो कार्यक्रम की भोभा को चार चांद लगा देते है और इसके विपरीत यदि हम भलोक व वेदमन्त्र के शब्दों को स्वरबद्ध

ISSN 2320-768X, Impact Factor : 2.2
Vol. IX, Issue I (April – 2021)

करके नहीं गाते है तो वे श्रोता जन पर अपना इतना अधिक प्रभाव नहीं छोड़गें जितना स्वरों में बंधे भाब्दों से होगा। उदाहरणस्वरूप :–

वेदमंत्र व गायत्री मन्त्र को ही किसी अतिथि आगमन पर गाया जाता है–

गायत्री मन्त्र
ओऊम भुर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गों देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्।
वेद मन्त्रः–
असतोमा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिगमय।
मृत्योंमा अमृत ंगमय।।

इसके अतिरिक्त पाठ्यक्रम में भी जब हम विद्यार्थियों को भलोक को गाकर सिखाऐंगे तो वह इसे जल्दी कश्टस्थ कर पाऐंगे। व संस्कृत भाशा के ज्ञानवर्धन में भी यह उपयोग काफी कारगर सिद्व हो सकता है। जैसे कि उदाहरण के तौर पर भगवान रामजी के वन जाने से संबंधित एक गीत बड़े बुजुर्गों एवं ग्रामीण अंचल में स्त्रियों द्वारा बहुत गया जाता है जो कि आजकल स्कूल व महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा कई कार्यक्रमों में प्रस्तुत किया जाता है तो छात्राओं को यह गीत इसलिए पंसद आया क्योंकि इसमें रामजी, व सीता संबंधी बातों का गुणगाान किया गया है। लेकिन यदि यही बातें हम गद्यां ा रूप में सैद्वातिक तौर पर बताते है तो युवा पीढ़ी इतनी रूचि न लेती।

प्रस्तत है राम व सीता संबंधित लोकगीत (धार्मिक) की सुन्दर पंक्तियॉ :–

1 राम और लक्ष्मण द ारथ के बेटे दोनो बणखंड जां।
एजी कोई राम मिले भगवान ।।
एक बण चाले दो बण चाले तीजे मैं लग आई प्यास।
एजी कोई राम मिले भगवान ।।
छोटा सा छोरा गऊ चराने पाणी तो प्याओ नंनलाल।
एजी कोई राम मिले भगवान ।।
नाहड़ कुआं, नाहड़ जोहड़ भर गए सरवर ताल।
एजी कोई राम मिले भगवान ।।
हर के घर तै उठी बंदरिया बरस रही झड़ लाग।
एजी कोई राम मिले भगवान ।।

2 भर गए कुएं भर गए जोहड़ भर गए सरवर ताल ।
एजी कोई राम मिले भगवान ।।
भर के लोटा पाणी का ल्याया पिया तो श्री भगवान।
एजी कोई राम मिले भगवान ।।
तेरा पाणी हम जब पिवांगे नाम बताओ माचड़ बाप।
एजी कोई राम मिले भगवान ।।
पिता अपणे का नाम न जाणूॅ –सीता सै म्हारी मां।
एजी कोई राम मिले भगवान ।।

3 चल भई लड़के उस नगरी मै जित थारी सीता मां।
एजी कोई राम मिले भगवान ।।
खड़ी–खड़ी सीता के ा सुखावै हरे रूख की छां।
एजी कोई राम मिले भगवान ।।
ढक ले री माता इनके क ाां नै बाहर खड़े श्री राम।
एजी कोई राम मिले भगवान ।।
इसे माण्स का मुखड़ा न देखूॅ जिसनै दिया बनवास।
एजी कोई राम मिले भगवान ।।

4 पाट गई धरती समा गई सीता खड़े लखावै श्री राम।
एजी कोई राम मिले भगवान ।।
भजभुज के नै चोटा पकड़या चोटे मैं हरी–हरी दान।
एजी कोई राम मिले भगवान ।।
राम की माया राम ही जाणै भजली सीता राम।
एजी कोई राम मिले भगवान ।।

इस प्रकार समय–समय पर रामायण, भागवत आदि के छन्दों एवं गीतों का भी प्रचार प्रसार होता रहता है जो कि साधारण जन की भाशा में होने पर अधिक लोकप्रिय हो जाता है। इसी प्रकार से यदि हम रामायण व रामचरित्रमानस में चौपाइयों को सुनते हैं तो वे भी सांगीतिक धुनों के साथ बहुत ही सुन्दर ढ़ग से गायी जाती है। उदाहरण स्वरूपः–

मंगल भवन अमंगल हारी।
प्रभुहुसद ारथ अजरनिहारी।
राम सिया राम सिया राज जय–जय राम।।

इसके अतिरिक्त हमारे दैनिक जीवन में एवं वैदिक काल में जन्म विवाह तथा अन्य संस्कारों के समय जो भी वेद मन्त्र बोले जाते है वे सभी गेयात्मक है।यद्यपि वेद ग्रन्थों में जो साहित्य है वह संगीत संबंधी नहीं होता लेकिन भलोकों व गीतिकाओं को जो संगीत के द्वारा सुन्दर रूप दिया जाता है वह संगीत कला के द्वारा ही संभव है। साम का जो गायन होता था वह उद्गाता कहलाता था और वह छन्दोबद्व गायन करता था। सामगायन में नियमबद्व ता, उच्चारण की भाुद्वता और स्वरों की रंजकता पर वि ोश ध्यान दिया जाता है। साम–गायन प्रायः स्तुति के रूप में होता था। इन्द्र, वायु, अग्नि, तरूण आदि अनेक देवताओं की उपासना करने तथा उन्हें प्रसन्न करने के लिए मंत्र तथा तंत्र दो साधन प्रचलित थे ये मंत्र संगीतमय एवं गेय होते थे साम वेद व साम संगीत पूर्णतः गेय है तथा इसमें लयबद्व ऋचाओं द्वारा ई वरोपासना की जाती थी इस संगीत को "देवजन विधा" कहा जाता था। वैदिक काल में साम्ही वैदिक गायन का अंलकार तथा ईश्वर वन्दना का सर्वोत्कृश्ट माध्यम था।

हिन्दी साहित्य एवं संगीतः– जिस प्रकार से संस्कृत साहित्य से संगीत अछूता नहीं है उसी प्रकार से हिन्दी साहित्य में भी संगीत का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि संगीत एवं काव्य का संबंध अनादि काल से ही चला आ रहा है। इसलिए संगीत एवं काव्य की आत्मा रस है और इस रस को विद्वानों ने "बह्यनन्द सहोदर" कहा है क्योंकि हिन्दी साहित्य कविता संगीत के बिना नहीं हो सकती। काव्य और संगीत एक सभ्य मानव जीवन के प्रधान उपकरण हैं। संगीत में साहित्य का इतना बड़ा योगदान है कि सुन्दर भाब्दों के बिना संगीत भून्य हो जाएगा उसका कोई अस्तित्व ही नहीं बचेगा। हिन्दी साहित्य के वे सुन्दर भाब्द ही एक सुन्दर संगीत माला बनाते हैं जो श्रोताओं को आनन्दित होने पर मजबूर कर देती है।

संगीत कला में यदि सुन्दर व कर्ण प्रिय स्वर हैं तो उनमें सुन्दर भाब्दों का होना भी अति आवश्यक हो जाता है। और वे सुन्दर भाब्द केवल अच्छे साहित्य (ाब्द रचना) के द्वारा ही प्राप्त हो सकते हैं। इसके अतिरिक्ति साहित्य और संगीत की स्वर लहरी की मधुरता और मादकता में मानव ही नहीं बल्कि प्रकृति का कण–कण सजीव हो उठता है। साहित्य और संगीत सनातन काल से एक दूसरे के पूरक हैं।

उदाहरण स्वरूप भक्त कवि सूरदास जी, मीराबाई एवं तुलसी दास जो जैसे महान कवियों के लिए संगीत साध्य न होकर साधन था। यही कारण है कि इनके काव्यों में संगीत की स्वछन्द धारा बहती है। इनके काव्य में संगीत के तीनो पक्ष गायन, वादन व नृत्य सभी स्वभाविक व सहज रूप से उभर कर आए हैं। साहित्य (काव्य और संगीत) का मणि कांचन प्रयोग इनके कीर्तनों की सार्थकता है।

सूरदास जी का पद किसी न किसी राग–रागिनी में अवश्य बंधा हुआ है व इनमें कहीं–कहीं अनेक रागों के द ान होते है। जैसे बितावल, धनाश्री, जैतश्री, भैरव, कल्याण तोड़ी। रासलीला, जडक्रीड़ा, पनघट आदि के पद तो देखते ही बनते हैं। इनकी लय, लोच, अभिव्यक्ति, भावना आदि लोकगीतो जैसी होती है।

"कान्हा भले ही भले हो।
टंगदान हमसो तुम मांगत, उल्टी रीति चले हो।
कौन दोश तुम मारवन छीन्यो ओर हि भाव मिले हो।।"

ऐसे पदों को आज भी भक्ति संगीत में गाया जाता है। सूरदास जी ने वर्शा ऋतु के समय में जो विरह की भावना पदों में दिखाई वहॉ पद को मल्हार राग में बॉध दिया और जहॉ तीखे व कठोर स्वभाव को दिखाना था वहॉ पद को कठोर स्वरों वाले राग मारूबिहाग में बांध दिया।

"हरि मुख देखो ही परतीति ।
जो तुम कौटि भांति पर सोंधो, जोगध्यान की रीति।
जंहि कछु समान ज्ञान मैं, यह नीकै हम जानै।
कहौ कहा कहिए अनुभव कौ, कसै मत मैं आनै।

इसके अलावा मीरा अनन्य कृश्ण दीवानी भक्त कवयित्री थी। इन्होंने जीवन भर कृश्ण को अपना सर्वस्व मानकर भक्ति रस में डूबकर स्वछन्द रूप से भजन कीर्तन किया। मीरा काव्य में बहुत स्थानों पर संगीत का सुन्दर, समुचित और आक ाक प्रयोग हुआ है। मीराबाई ने अपने प्रेम, विरह और मिलन पदों को गेय पदों की भौली में व्यक्त किया है।

इसके अलावाा मीरा अनन्य कृश्ण दीवानी भक्त कवयित्री थी। इन्होंने जीवन भर कृश्ण को अपना र्स्वस्व मानकर भक्ति रस में डूबकर स्वछन्द रूप से भजन कीर्तन किया। मीरा काव्य में बहुत स्थानों पर संगीत का सुन्दर, समुचित और आकर्शक प्रयोग हुआ है। मीराबाई ने अपने प्रेम, विरह और मिलन पदों को गेय पदों की भौली में व्यक्त किया है। मीराबाई की पदावली में भी अनेक राग आए हैं जैसे–ललित, कान्हड़ा, गुजरी, सोरठ, जौनपुरी, बिहाग, पहाड़ी आदि।

मीराबाई के काव्य का एक उत्तम उदारहरणः–

"रंगभरी रंगभरी राग सूभरी री।
होली खेल्या श्याम संग रग सूं भरी री।
उडत गुलाल लाल बादला से रंग लाल।
पिचकां उड़ावां रंग–रंग री झरी री।
चोवा चंदन अरगजाम्हां, केसर जो गागर भरी री।
मीरा दासी गिरधर नागर, चेरीचरण धरीरी।।
उपरोक्त पद राग मल्हार में रचित है।।"

सौलहवी भाताब्दी सन्तों, गायकों, वाग्गेयकारों और कवियों की दृ ि ट से भारतीय इतिहास का स्वर्णिम युग कहा जाता है इन महान कवियों एवं संत गायकों में गोस्वामी तुलसीदास जी का नाम पूर्णिमा

के सुधाकर की भांति प्रदोप्त है। गोस्वामी तुलसी दासजी ने "रामचरितमानस" "कवितावली" "गीतावली" एवं विनय पत्रिका आदि महान ग्रन्थों के अतिरिक्त अनेक काव्य–ग्रन्थों की रचना की है। किन्तु उन्होंने जो भी लिखा वह अपने इश्ट देव भगवान राम के बारे में लिखा। उनके द्वारा रचित भावानुकूल रागों के अनेक शी र्लुक्त पद प्राप्त हुए है। जिन्होने गाकर मानव भव सागर से पार हो जाता है।

"साहित्य और संगीत" के भाा वत संबंध को स्वीकार करते हुए तुलसीदास जी ने अपनी भक्तिमय काव्य साधना में संगीत को प्र्यापत महत्व दिया।

तुलसी दास जी ने लिखा है–

"मारू राग सुलभ सुखदायी" रामचरित मानस

तुलसी दास जी को संगीत का केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं था, अपितु उन्होंने अपने काव्य में स्वर, ताल तथ लय की भी बहुत सुन्दर ढ़ग से मिश्रित किया है। तुलसीदास द्वारा लिखित ग्रन्थ "रामचरितमानस" में लिखी गई चौपाईयॉ आज भी विभिन्न धनों में लोककण्ठ द्वारा स्वरित होती रहती है।

ब्रज मण्डल के महान सन्त संगीताचार्य स्वामी हरिदास जी उत्तर भारतीय संगीत की महान विभूतियों में से एक हैं उन्होंने श्री राधा–कृश्ण की प्रेम भक्ति तथा रसोपासना के उद्देश्य से श्री भयामाकुंज बिहारी के नित्य–विहार उपासना को मान्यता दी। स्वामी जी की रचनाओं के पद जिन–जिन रागों में रचित है। वे क्रम ाः इस प्रकार हैं, विभास, बिलावल, आसावटी, कल्याण, कान्हड़ा मल्हार, सारंग, गौड़ आदि। स्वामी जी का प्रिय राग कान्हड़ा था। इस सम्प्रदाय में आचार्यों की जयन्तियॉ मनाई जाती थी। ये जयन्तियॉ किसी वि ोश तिथि पर ही मनाई जाती थी। इन तिथियों पर क्रम ाः मल्हार के पद तथा बसन्त राग के पदों का गायन होता था।

उदाहरणः–

"हिन्डोरे न झूलत लाल दिन दुन्हू दुल्हिन"

इसके अतिरिक्त सभी भक्त कवियों की रचनाओं में एक वि ोशता पाई जाती है कि इनकी रचनाओं में पदों को जब किसी राग में बांधा जाता है तो वे नियमानुसार, समयसिद्वान्तनुसार व ऋतु सिद्वांत के अनुसार बांधा गया है। अधिकां ा कवि अपने पदों की रचना प्रातःकालीन राग में करते थे जिनमें भैरव, बिलावल, आसावरी, सारंग तथा तोड़ी राग प्रमुख थे। इसके अतिरिक्त भक्त कति मृदंग, वीणा, डफ, रबाब आदि वाद्यों का प्रयोग भी करते थे। तो उपरोक्त वाद्यों का प्रयोग पदों को और अधिक सुन्दर बना देता था। अतः हमारे महान संत कवि जिनका हमने उल्लेख किया है उनके साहित्य में यह पूर्णरूप से स्पश्ट हो जाता है कि साहित्य (काव्य) के अन्तर्गत संगीत बहुत गहनता से समाया हुआ है। संगीत के बिना हम साहित्य की कल्पना भी नहीं कर सकते और युगों–युगों तक संगीत साहित्य की सहायता के द्वारा मानस पटल पर अपनी सुन्दर छाप छोड़ता रहेगा।

निश्कर्श

साहित्यिक भाब्द व स्वर दोनों ही नाट्मय हैं फिर वे चाहे संस्कृत साहित्य के हों या हिन्दी साहित्य के। संगीत नाद् प्रधान साहित्य है व साहित्य भाब्द प्रधान संगीत। हमारा भारतीय संगीत पूर्ण रूप से नादात्मक है। तो काव्य भाब्द व अर्थ प्रधान है संगीत जिन स्वरों की निराकार स्वरों के द्वारा अभिव्यक्ति

करता हैं उन्हीं को हिन्दी कविता व संस्कृत साहित्य साकार रूप प्रदान करते है अतः जिस प्रकार भाशा से व्याकरण, अग्नि से दहकता, निर्झर से जल, और जल से भीतलता उसी प्रकार साहित्य (संस्कृत व हिन्दी)को संगीत से व संगीत को साहित्य (हिन्दी व संस्कृत) से कदापि अलग नहीं किया जा सकता।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. भारतीय संगीत का इतिहास (आध्यात्मिक एवं दा ार्निक) डा0 सुनीता भार्मा। संजय प्रका ान नई दिल्ली।
2. सूरदास का संगीत पक्ष– प्रपन्नाचार्य, 1970
3. सूर : एक सांगीतिक व्यक्त्वि–संगीत कला विहार, जुलाई1980, पृ028, लेख।
4. तुलसी का सौन्दर्य बोध– डा0 छोटे लाल दीक्षित
5. राम चरित मानस, अरण्यकाण्ड, 34
6. साहित्यालोचन, डा0 श्याम सुन्दर दास
7. स्वामी हरिदास स्मारिका।
8. मीराबाई की पदावली –डा0 राजनागपाल।
9. सूर सागर– डा0 कृश्ण देव भार्मा।
10. संगीत पत्रिका, दिसम्बर 1985
11. संगीत पत्रिका, 1970
12. निबंध संगीत, लक्ष्मी नारायण गर्ग।
13. ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास, प्रभु दयाल मित्तल।
14. राम चरितमानस – अरण्यकाण्ड, 34
15. भारतीय सांगीतिक इतिहास : उमे ा जो ी।
16. संगीत पत्रिका–भक्ति संगीत अंक
17. ि ाव स्वरोद्य – भलोक 11 6
18. संगीत बोध – डा0 भारच्चन्द्र श्रीधर परांजये प्रका ाक – मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल